नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर विरोध क्यों?

सुप्रीम कोर्ट के आरक्षण पर दिए फैसले के विरोध में बुधवार को भारत बंद का आह्वान किया गया. हालांकि जन समर्थन नहीं मिलने से भारत बंद विफल हो गया, लेकिन इससे यह पता चलता है कि देश के लगभग सारे राजनीतिक दल सुप्रीम कोर्ट के फैसले का विरोध कर रहे हैं. जाहिर है वोट बैंक की राजनीति के कारण ऐसा किया जा रहा है.दरअसल,आरक्षण पर सुप्रीम कोर्ट ने जिस तरह से राज्यों को अति दलित और अति पिछड़ों को वर्गीकृत कर कोटा निर्धारित करने के लिए कहा है उससे जाति आधारित राजनीति करने वाले नेताओं और दलों के साथ ही भाजपा और कांग्रेस जैसे राष्ट्रीय दल भी दुविधा में आ गए हैं. खासतौर पर मंडलवादी दल परेशानी महसूस कर रहे हैं. सुप्रीम कोर्ट के फैसले का विरोध कमोबेश सभी राजनीतिक दलों ने किया है, लेकिन सबसे अधिक बेचैनी समाजवादी पार्टी, राष्ट्रीय जनता दल जनता, दल यूनाइटेड, लोक जनशक्ति पार्टी, बहुजन समाज पार्टी, चंद्रशेखर आजाद रावण की पार्टी में महसूस की जा रही है. इसी बेचैनी का नतीजा है कि बुधवार को इस फैसले के विरोध में किया गया भारत बंद का आह्वान लगभग असफल रहा. भाजपा के दलित और आदिवासी सांसदों ने भी सुप्रीम कोर्ट के फैसले का विरोध किया है. इस वजह से पार्टी का राष्ट्रीय नेतृत्व इस मामले में बैक फुट पर है .वास्तव में इसमें कोई शक नहीं कि पिछले 75 वर्षों से चली आ रही आरक्षण व्यवस्था के कारण एक क्रिमी लेयर पैदा हो गई है. आरक्षण का लाभ इसी क्रीमी लेयर को मिल रहा है. जैसे आदिवासी आरक्षण का सबसे अधिक लाभ राजस्थान और उत्तर प्रदेश की मीणा जाति को मिला है. जबकि दलित आरक्षण का सर्वाधिक फायदा जाटव, खटीक, पासी और महार ही मुख्य रूप से उठा रहे हैं.

जाहिर है इससे संविधान निर्माताओं का सामाजिक विषमता दूर करने का सपना पूरा नहीं हो रहा है. सुप्रीम कोर्ट के फैसले का भले ही सभी राजनीतिक दल विरोध कर रहे हैं लेकिन सभी पार्टियां जानती हैं कि इस फैसले का असर अति वंचित वर्ग पर दिखाई दे रहा है. देर सबेर यह उपेक्षित दलित और आदिवासी वर्ग जाग खड़ा होगा और अपने हितों के लिए संघर्ष करेगा.सनद रहे अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति में आरक्षण वर्गीकरण की बहस, जो लंबे समय से चली आ रही थी, को सुप्रीम कोर्ट ने अपने निर्णय से दूर कर दिया है. मुख्य न्यायाधीश की अध्यक्षता वाली सुप्रीम कोर्ट की सात न्यायाधीशों की संविधान पीठ ने 6:1 के बहुमत के फैसले में कहा कि राज्यों को राष्ट्रपति ने सूची में अधिसूचित अनुसूचित व अनुसूचित जनजातियों को उपवर्गीकृत करने की अनुमति प्रदान कर दी गई है, ताकि उन्हें सार्वजनिक रोजगार और शिक्षा में 'अधिक' अधिमान्यता प्रदान की जा सके. देश में अति वंचित तबकों के अंदर कई तरह के सामाजिक समुदाय जैसे, कामगार, हुनरमंद, कारीगर और बागवानी आदि करने वाले वर्ग सामाजिक न्याय की नीतियों और राजनीति को दुरुस्त करने के लिए लंबे समय से मुखर हैं, लेकिन उन समुदायों की समाज व राजनीति में अदृश्यता है. इसलिए देश की संसद तक उनकी आवाज नहीं आ पाती है. इस फैसले से उन आवाजों को भी बल मिलेगा और उन पर विचार किया जा सकेगा. दरअसल, सुप्रीम कोर्ट का यह निर्णय कई मायनों में क्रांतिकारी साबित होगा. इससे अति वंचित समुदाय को आगे आने का मौका मिलेगा.

बहरहाल,आरक्षण वर्गीकरण के विरोध में कई तरह के भ्रामक तर्कों से बहस को भटकाया जा रहा है, जबकि हमें फैसले को इस तरह से भी देखने की जरूरत है कि सर्वोच्च न्यायालय ने जाति पदानुक्रम के सबसे निचले पायदान पर स्थित सबसे कम सुविधा प्राप्त समुदायों की चिंताओं को सामने लाकर न्याय की खोज को और गहरा कर दिया है. विरोधी रुख उनके ही वर्ग के अति वंचित वर्गों में उनके लिए अविश्वसनीयता पैदा कर रहा है, जबकि विरोधी रुख अपनाने वालों को सोचना चाहिए कि अभी भले ही तात्कालिक रूप से सुप्रीम कोर्ट के फैसले का विरोध करने से लाभ मिल जाए लेकिन देर सवेर इसका नुकसान ऐसे सभी राजनीतिक दलों को उठाना पड़ेगा जो क्रीमी लेयर के वर्गीकरण का विरोध कर रहे हैं. कुल मिलाकर सुप्रीम कोर्ट के ऐतिहासिक फैसले का विरोध केवल इसलिए किया जा रहा है ताकि वोट बैंक सुरक्षित रहे.

राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस पर विशेष

चाँद से सूरज तक भारत की अंतरिक्ष विजय

डॉ.पी.के पुरोहित

23 अगस्त 2024 को देश अपना पहला राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस मनाएगा जिसका विषय होगा चंद्रमा को छूते हुए जीवन को छूना- भारत की अंतरिक्ष गाथा. एक वर्ष पूर्व 23 अगस्त 2023 शाम लगभग 6 बजे पूरी दुनिया के वैज्ञानिक समुदाय के साथ हर भारतीय की सांसें अटकी हुई थी, यह वह पल था जब हम सभी अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत की लम्बी छलाँग के साक्षी बने थे. जब चंद्रयान-3 चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास की सतह पर भारतीय समय अनुसार सायं 06:04 बजे के आसपास सफलतापूर्वक उतर चुका था. भारत उस दिन चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव तक पहुंचने वाला पहला देश बन गया है और रूस, अमेरिका और चीन के बाद चंद्रमा पर लैंडिंग करने वाला चौथा देश बना चूका है. भारत अंतरिक्ष के क्षेत्र में एक नया इतिहास लिख चुका है. चंद्रयान-3 भारत का महत्वाकांक्षी और पूर्ण सफल चंद्र मिशन है. इस ऐतिहासिक उपलब्धि का सम्मान करने के लिए, 23 अगस्त को राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस के रूप में घोषित किया. निसंदेह अंतरिक्ष दिवस भारत में साइंस एवं टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में अध्यनन कर रहे स्टूडेंट्स, वैज्ञानिकों और इंजीनियरों को अंतरिक्ष के क्षेत्र में कार्य करने के लिए प्रेरित करेगा, और यही इस दिवस की सार्थकता भी होगी.

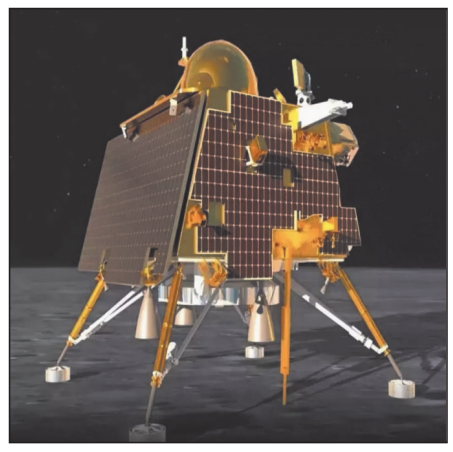

चंद्रयान-3 का प्रक्षेपण सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र श्रीहरिकोटा से 14 जुलाई, 2023 शुक्रवार को भारतीय समय अनुसार दोपहर 2:35 बजे हुआ था. अंतरिक्ष यान ने 5 अगस्त 2023 को चंद्र कक्षा में सफल प्रवेश किया. इसमें एक लैंडर और एक रोवर है, लेकिन इसमें ऑर्बिटर नहीं है. हम सभी ने भारत के दूसरे चंद्रयान-2 मिशन जो की अत्यधिक जटिल मिशन था की आंशिक सफलता को देखा था. विज्ञान में कोई भी प्रयोग कभी असफल नहीं होता.

20 अगस्त 2019 को चंद्रयान-2 को सफलतापूर्वक चंद्र कक्षा में स्थापित किया गया. 100 किमी चंद्र ध्रुवीय कक्षा में चंद्रमा की परिक्रमा करते हुए 02 सितंबर 2019 को विक्रम लैंडर को लैंडिंग की तैयारी में ऑर्बिटर से अलग कर दिया गया था. बाद में, विक्रम लैंडर सतह से 2.1 किमी की दूरी पर अपने पथ से भटक गया और अंतरिक्ष यान के ग्राउन्ड कंट्रोल ने संचार खो दिया. हम सिर्फ चंद दूरी से निराश हो गए लेकिन यह मिशन नाकाम नहीं रहा, क्योंकि चंद्रयान-2 का ऑर्बिटर चाँद की कक्षा में अपना काम कर रहा है. इस ऑर्बिटर में कई साइंटिफिक उपकरण हैं जो अच्छे से काम कर रहे है. विक्रम लैन्डर और प्रज्ञान रोवर से जो प्रयोग होना थे वह नहीं हो पाए. देश के वैज्ञानिकों ने हार नहीं मानी और इसरो ने इस अभियान में रह गयी अपनी कमियों को दूर कर नयी ऊर्जा के साथ सफलता अर्जित की. इसके पूर्व चंद्रयान-1 चंद्रमा के लिए भारत का पहला मिशन था. चंद्रयान-1 ऑर्बिटर का मून इम्पैक्ट प्रोब 14 नवंबर 2008 को चंद्र सतह पर उतरा, जिससे भारत चंद्रमा पर अपना झंडा लगाने वाला चौथा देश बन गया. चंद्रयान-1 के ऑर्बिटर ने चंद्रमा पर पानी के संकेतों की खोज की. अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के उपकरण ने भी चांद पर पानी होने की पुष्टि की है. उपग्रह ने चंद्रमा के चारों ओर 3400 से अधिक परिक्रमाएं कीं और मिशन तब समाप्त हुआ जब 29 अगस्त 2009 को अंतरिक्ष यान के साथ संचार ख़त्म हो गया और रविवार 30 अगस्त 2009 को भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने चंद्रयान प्रथम औपचारिक रूप से समाप्त कर दिया. अंतरिक्ष के रहस्य व रोमांच किसी भी व्यक्ति को अनायास ही अपनी ओर आकर्षित कर सकते हैं. इसरो की सफल वैज्ञानिक यात्रा को कागज पर कलमबद्ध करना समुद्र किनारे की रेत को मुठ्ठी में पकड़ने की कोशिश की तरह है. यह यात्रा हर भारतीय को गौरवान्वित करने वाली है.

भारत के भविष्य के विकास में उपग्रहों की महत्वपूर्ण भूमिका को महसूस करते हुए, डॉ. होमी भाभा ने 16 फरवरी, 1962 को भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष अनुसंधान समिति का गठन किया और डॉ. विक्रम साराभाई को इसका पहला अध्यक्ष नियुक्त किया. यह समिति 15 अगस्त, 1969 को भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के रूप में एक बड़ा संगठन बनी. भारत सरकार ने जून 1972 में अंतरिक्ष आयोग और अंतरिक्ष विभाग का गठन किया और इसरो को सितंबर 1972 में अंतरिक्ष विभाग के अधीन कर दिया गया. . इसके बाद प्रारम्भ हुआ इसरो का एक अनवरत सफर. भारत की अंतरिक्ष यात्रा में जहाँ पहला रॉकेट साइकिल पर गया था वही आज चंद्रयान-3 ने चांद पर पांव जमाए. और सूरज के अध्ययन करने वाले सोलर प्रोब, सोलर मिशन आदित्य-एल1 ने इतिहास रच दिया.

महाकौशल की डायरी

कार्यकर्ताओं को फिर मिला झुनझुना...

अविनाश दीक्षित

भाजपा को विश्व की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी माना जाता है, इस ओहदे को बरकरार रखने के लिए पार्टी नये सदस्य बनाने का अभियान प्रारंभ करने जा रही है. इसके लिए राष्ट्रीय और प्रादेशिक स्तर पर बैठक हो चुकीं हैं. पार्टी की ओर से कार्यकर्त्ताओं से कहा गया है कि अधिक से अधिक सदस्य बनाने वाले कार्यकर्त्ताओं को विभिन्न समितियों, प्रकोष्ठों, मंडलों में रिक्त पदों पर नियुक्त किया जाएगा. इस बात को लेकर भाजपाई गालियारों में नई चर्चाएं छिड़ गईं हैं, और वह नेता मायूस नजर आने लगे हैं, जिन्हें लग रहा था कि लोकसभा- विधानसभा चुनाव के बाद पार्टी विभिन्न निगम, मंडल, प्राधिकरण में रिक्त पड़े पदों पर नियुक्तियां करेगी. ऐसे नेता दिल्ली-भोपाल के कई चक्कर लगा आये और उन्हें आश्वस्त किया गया कि शीघ्र नियुक्तियां होंगी, लेकिन कोई न कोई कारण से मामला टलता रहा. अब इन नेताओं को फिर लगने लगा है कि यह नियुक्तियां सदस्यता अभियान समाप्त होने के बाद तक टल गईं हैं. हालांकि पार्टी में निष्काम भाव से कार्य कर रहे नेताओं की भावभंगिमा पर कोई विशेष फर्क नहीं पड़ा.

इस दर्जे के नेताओं का मानना है कि जब पार्टी विश्वस्तरीय नहीं थी, तब उनको तवज्जों नहीं मिली, अब तो विश्व की सबसे बड़ी पार्टी का तमगा रखने वाली भाजपा उनका क्या स्मरण रखेगी. वैसे भी पार्टी अब विचारधारा की जगह सियासी नफा-नुकसान के तौर-तरीके से चल रही है, और अब तो कांग्रेस से आये नये भाजपाईयों को एडजस्ट करने का फार्मूला तलाशा जा रहा है, ऐसे में पार्टी कोई लॉलीपाप दिखाये, इससे कोई फर्क नहीं पड़ने वाला. उनकी यह बात भी सही है कि मकान तो मजदूर बनाते हैं लेकिन उसमें रहता कोई और है.

कचरा हो गई कचरा उठाने की व्यवस्था

महाकौशल की सबसे बड़ी जबलपुर नगर निगम की डोर-टू-डोर कचरा कलेक्शन की व्यवस्था ही कचरा हो गई है. कुछ महीने पहले तक यह कार्य ठेके पर कराया जाता था, तब ठेका कंपनी के कर्मचारियों की मनमानी और कचरा कलेक्शन की आड़ में चांदी काट रहे निगम अफसरों की कंपनी से मिलीभगत के चलते सफाई व्यवस्था बेपटरी थी, जबकि कंपनी को पूरा भुगतान किया जा रहा था. औचक निरीक्षण में निगमायुक्त प्रीति यादव ने कई गड़बड़ियां पकड़ी. इसके उपरांत डोर-टू-डोर कचरा कलेक्शन का कार्य कंपनी से वापस ले लिया गया और नगर निगम ने अपने संसाधनों से इस कार्य को करने का बीड़ा उठाया. शुरूआत से बड़े-बड़े दावे किये गये, किन्तु मैदानी हकीकत कुछ और रही और आज भी यही आलम है. शहर के 79 वार्डों में से डोर-टू-डोर कचरा कलेक्शन का कार्य उन्हीं वार्डों में होता हुआ दिखाई पड़ रहा है, जहां सत्ताधारी भाजपा के पार्षद हैं अथवा विपक्ष के उंगलियों में गिने चुने मुखर पार्षद हैं. अनेक वार्डों में दो-तीन दिनों के बीच एक बार कचरा कलेक्शन वाहन पहुंच रहे हैं, जिसके चलते नागरिक सड़कों पर कचरा फेंकने लगे हैं, नतीजतन अधिकांश सड़कों पर बदबू मारते कचरे के ढ़ेर नगर निगम की ओर से किये जा रहे दावों की पोल खोलते नजर आ रहे हैं, दूसरी तरफ संक्रामक बीमारियां बढ़ाने के कारक भी बन रहे हैं. विडम्बना यह है कि कचरा कलेक्शन व्यवस्था की दुर्दशा से जहां आम नागरिक हद दर्जे तक परेशान हैं, वहीं कचरे के खेल से आलीशान जीवन व्यतीत कर रहे कुछ अफसर और पार्षदों की मिलीभगत व्यवस्था को पटरी पर लाने में सहयोग करने की बजाय एक बार फिर डोर-टू-डोर कचरा कलेक्शन व्यवस्था ठेके पर दिये जाने पर पूरा जोर लगा रहे हैं.

खुशफहम स्कूल संचालक

फर्जी किताबों और अनाप-शनाप फीस वसूली के मामले में महीनों से जेल में बंद स्कूल संचालकों, प्राचार्यों को सुप्रीम कोर्ट से जमानत मिल गई है. सुप्रीम कोर्ट के राहतकारी आदेश के बाद निजी स्कूल संचालक-प्राचार्यों सहित उनके परिजनों के बीच प्रसन्नता का माहौल है, जबकि अभिभावकों और कार्रवाई करने वाले अफसर थोड़ा मायूस हैं. यद्यपि अधिकारियों तथा कानूनी विशेषज्ञों का मानना है कि स्कूल संचालकों को जमानत का लाभ देर-सबेर मिलना ही था,लेकिन इसका असर उनके विरूद्ध दर्ज प्रकरणों पर नहीं पड़ेगा. सुप्रीम कोर्ट ने अपने आदेश में केस के तथ्यों, दस्तावेजों कोई टिप्पणी नहीं की है. सुप्रीम आदेश के बाद यह बात खूब प्रचारित की जा रही है कि जिला प्रशासन की कार्रवाई पर अब पूर्ण विराम लग गया है, इससे इतर प्रशासनिक अधिकारियों का कहना है कि यदि अब भी किसी स्कूल की शिकायत आएगी, तो कार्रवाई अवश्य की जाएगी.

4 बिलों पर एनडीए घटक दलों में नाराजगी

मोदी सरकार के मौजूदा कार्यकाल में अब तक 4 अहम माने जा रहे विधेयकों पर केंद्र को एनडीए के घटक दलों का विरोध सहना पड़ा और फिलहाल के लिए तो उन्हें ठंडे बस्ते में डाल दिया गया है. ये बिल हैं ब्राडकास्टिंग रेगुलेशन बिल, वक्फ बोर्ड संशोधन बिल, लेटरल एंट्री बिल और लांग टर्म कैपिटल गेन बिल.

ब्राडकास्टिंग रेगुलेशन बिल के ड्राफ्ट में डिजिटल ब्रॉडकास्टर्स के लिए एक नई रेगुलेटरी बॉडी ब्रॉडकास्टिंग अथॉरिटी ऑफ इंडिया बनाने का प्रस्ताव था. इसके अलावा सेल्फ रेगुलेशन के लिए टू- टियर सिस्टम बनाने का प्रस्ताव ब्रॉडकास्टिंग बिल के ड्राफ्ट में किया गया था. इसमें सरकार के हस्तक्षेप का प्रावधान भी था. निगरानी समिति बनाने का भी इस बिल में प्रावधान था जो सेंसर बोर्ड की तरह ही काम करती. इसमें प्रावधान था कि बिल के लागू होने के बाद कोई सरकार की आलोचना नहीं कर सकेगा. इससे न केवल विपक्ष, बल्कि एनडीए के घटक दल भी चिढ़ गए, क्योंकि इससे अभिव्यक्ति की आजादी पर आंच आने वाली थी. वक्फ बोर्ड संशोधन विधेयक के विरोध का कारण अल्पसंख्यक वर्ग के अधिकार पर सीधा हमला बताया गया. खास तौर पर मुस्लिम संगठन इसे सरकार का उनके धर्म में दखल मान रहे हैं, जबकि कांग्रेस इसे धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार का उल्लंघन बता रही है. यही वजह थी कि एनडीए के घोटक दल भी अपना वोटबैंक खिसकने के डर से इस बिल के विरोध में उठ खड़े हुए. लेटरल एंट्री का मतलब है कि सरकारी नौकरियों में बड़े पदों पर बाहर के लोगों को भर्ती करना. अब तक तो यही होता था कि सरकारी विभागों में नीचे के पदों से नौकरी शुरू होती थी और धीरे-धीरे तरक्की पाकर बड़े पदों पर पहुंचते थे. लेकिन सरकार की मंशा है कि कुछ खास पदों के लिए बाहर के लोग भी आवेदन करें जिनके पास अनुभव और ज्ञान ज्यादा हो इससे केंद्रीय मंत्रालयों में निजी क्षेत्र के एक्सपर्ट्स की सीधी भती होती. लेकिन विपक्ष और खुद सरकार के घटक दल इसे आरक्षणा के खिलाफ एक बड़ा हमला मान रहे हैं. अगर कैपिटल गेन टैक्स की बात करें तो किसी की पूंजी पर जो लाभा होता है, उस पर लगने वाला टैक्स कैपिटल गेन टैक्स कहलाता है. यह दो तरीके का होता है- एक शॉर्ट टम कैपिटल गेन टैक्स और एक लॉन्ग टर्म कैपिटल गेन टैक्स.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

यह कैसी राजनीतिक लड़ाई, पूछते हैं नागरिकता और पढ़ाई

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, सभी जानते हैं कि ढोल में पोल होती है, फिर भी कुछ लोग जानबूझकर नेताओं की शैक्षणिक योग्यता और उनकी डिग्रियों पर सवाल उठाया करते हैं. जनता को इससे क्या लेना-देना! नेता के लिए उसका नेता होना ही काफी है. उसकी शिक्षा को लेकर इतनी उत्सुकता क्यों होनी चाहिए?

हमने कहा, सिर्फ इतनी ही बात नहीं है. बीजेपी सांसद डा. सुब्रमण्यम स्वामी ने लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी की शैक्षणिक योग्यता के अलावा उनकी नागरिकता पर भी सवाल उठाया है. वह सिद्ध करना चाहते हैं कि राहुल विदेशी नागरिक हैं.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, यदि राहुल विदेशी होते तो भारत जोड़ो यात्रा क्यों निकालते? बीजेपी ने स्वामी को सुपारी दे रखी है कि मौका पाते ही गांधी परिवार पर टूट पड़ो! राहुल गांधी ने 2004 में चुनावी शपथपत्र में बताया था कि उन्होंने

कैर्मब्रज से 1995 में एमफिल की डिग्री ली थी. इसके

बाद 2009 में राहुल ने बताया था कि उन्होंने फ्लोरिडा यूनिवर्सिटी से ग्रेजुएशन किया था. 2014 में कहा था कि उन्होंने डेवलपमेंट स्टडीज में एमफिल किया है. इसमें से कितनी बातें सच हैं, पता नहीं!

हमने कहा, डा. स्वामी ने खोज की है कि राहुल ब्रिटिश नागरिक हैं. 2004 के शपथपत्र में राहुल गांधी ने जिस कंपनी में अपने शेयर होने की बात कही थी, उसके मुताबिक राहुल को इंग्लैंड का नागरिक बताया गया था. उन्होंने एमफिल का जो दस्तावेज जमा कराया था, उसमें उन्हें राउल विंकी लिखा गया था.

पड़ोसी ने कहा, राहुल कहो या राउल, कोई फर्क नहीं पड़ता. कांग्रेस भी तो पीएम मोदी और स्मृति ईरानी की डिग्री को चुनौती देती रही है. यदि पढ़ाई-लिखाई ही पैमाना होती तो केवल शिक्षाविद, प्रोफेसर और वाइस चांसलर ही चुनाव लड़ते. सरकार चलाने में किताबी ज्ञान नहीं, प्रैक्टिकल समझ लगती है. वोट के रूप में जनता द्वारा दी गई स्वीकृति ही नेताओं की असली डिग्री है. कांग्रेस शासित किसी भी राज्य की यूनिवर्सिटी कभी भी राहुल को ऑनरेरी डाक्टरेट की डिग्री दे सकती है!

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 11644 -डॉ. सागर खादीवाला

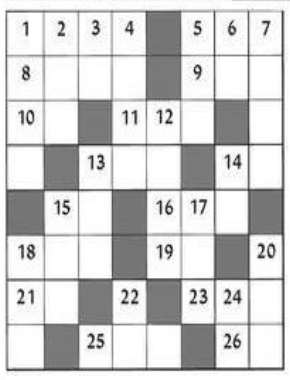

बायें से दायें

1. संगीत में सात स्वरों के उतार-चढ़ाव का क्रम, स्वरग्राम, 5. एक कल्पित पत्थर जिसके लोहा 8. व्यायाम, बहुलता छुआने से सोना बन जाता है,। (उर्दू), 9. चिपकाना, चपकना, 10. पांव, पैर, 11. तोप, बंदूक आदि का छोड़ना, 13. आग, अग्नि (सं.), 14. शालि जिसमें से चावल निकलता है, 15. चेतना, होश, व्याकरण में वह विकारी शब्द जो किसी कल्पित या वास्तविक वस्तु का बोधक होता है (सं.), 16. बादल, मेघ, 18, मंच, चार लट्ठों पर बांधकर बनाया गया ऊंचा स्थान, 19. प्यारा या दुलारा लड़का, 21. चोट, आघात, हमला, सप्ताह का दिन, 23. हिलोर, तरंग, 15. असत्य, अशुद्ध (उर्दू), 26. समूह, लोगों का गुट, फूल की पंखुड़ी

ऊपर से नीचे

1. घबड़ाहट, हिचक, 2. सेना के लिय खाद्य सामग्री, राशन (उर्दू), 3. बनानेवाला, अगर (उर्दू), 4. निर्वाचन में प्रतिनिधि चुनने के लिए मत देने की क्रिया या भाव, 5. भरण-पोषण करना, हिंडोला, 6. स्वाद, फलों आदि का निचोड़ा हुआ अंश, 7. अनादि काल, बहुत दिनों से चली आई परंपरा, शाश्वत, 12. कोलाहल, गड़बड़ी, 13. ज्ञान या बोध न होने का भाव, 14. प्रवाह, दफा, 15. गमन, चलना, एक स्थान से दूसरे स्थान को आने-जाने के साधन (कम्युनिकेशन), 17. पारिश्रमिक लेबर खरीदने-बेचने में सहायता देने वाला, मध्यस्थ (उर्दू), 17. पीब, सामग्री (उर्दू), 20. निष्कपट, सीधा-सादा, सुगम, 22. भूमि जोतने का उपकरण, 24. सीमा, मर्यादा (उर्दू)

Solution 11643

मे	धा	पा	ट	क	र		च
दि	न	क	र		सा	द	र
नी		क	ट	ह	ल		म
	दु	ला	रा			ता	रा
मा	रा		ना		व	ज	ह
र	च	ना		सु	द		ट
क	र		पु	र	न	म	
	ण		र	भा		हा	ला

ज्योतिषाचार्य पं. नारायणशंकर नाथूराम व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में व्यवसाय में सुधार होगा. पुरानी समस्याओं से छुटकारा मिलेगा. वर्ष के मध्य में मित्रों व भाईयों के सहयोग से कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी. दाम्पत्य जीवन सुखमय बना रहेगा. लाभ होगा, पर नहीं के बराबर. वर्ष के अन्त में विवादित राजनीति का सामना करना पडेगा. मित्र से तनाव रहेगा. व्यापार में परिश्रम एवं व्यस्तता रहेगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को व्यवसाय में सुधार होगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को मित्र व भाईयों के सहयोग से कार्य क्षेत्र में वृद्धि होगी. कर्क राशि के व्यक्तियों को व्यापार में परिश्रम की अधिकता रहेगी. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को पुरानी समस्याओं से छुटकारा मिलेगा. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों का स्वास्थ्य परिवर्तन होगा. विवादित राजनीति का सामना करना होगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को दाम्पत्य जीवन में आनन्दमय वातावरण रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक निडर, साहसी, महत्वाकांक्षी एवं आकर्षक व्यक्तित्व का होगा. बचपन में स्वास्थ्य नरम गरम रहेगा. अस्थिर बुद्धि का होने से उटपटांग बात करेगा. विद्या प्रारंभ में कम एवं बाद में अच्छी रहेगी. मित्रों की संख्या अधिक होगी. माता पिता का आदर करेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

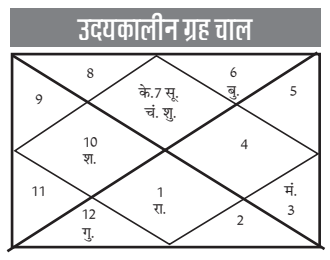

पंचांग

रा.मि. 01 संवत् 2081 भाद्रपद कृष्ण चतुर्थी भृगुवासरे दिन 3/5, रेवती नक्षत्रे रात 1/17, शूल योगे दिन 3/18, बालव करणे सू.उ. 5/38 सू.अ. 6/22, चन्द्रचार मीन रात 1/17 से मेष, शु.रा. 12, 2,3,6,7,10 अ.रा. 1,4,5,8,9,11 शुभांक- 5,7,1.

व्यापार भविष्य

भाद्रपद कृष्ण चतुर्थी को रेवती नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, के भाव में 30 से 40 रूपये मंदी होगी. धान्यों के भाव में अस्थिरता रहेगी. कपास, वस्त्र जूट, पाट, बारदाना, के भाव में मंदी होगी. भाग्यांक 3441 है.

मेष- वैभव के सामान पर बड़े खर्च की संभावना है. अपने काम को वरीयता से निपटाने का प्रयास करें. परिश्रम अधिक करना पड़ेगा. नियमितता का ध्यान रखें.

वृषभ- जोखिम के कार्यों में नुकसान हो सकता है. सावधानी बांछनीय. यश, मान सम्मान प्राप्त होगा. अधिकारी वर्ग आपकी भरपूर मदद करेंगे. संतोष बना रहेगा.

मिथुन- बुजुर्गों के मार्गदर्शन से अच्छी सफ्लता मिलेगी. पारिवारिक सहयोग भरपूर मिलेगा. धार्मिक कार्यो मेंसुखरहेगा. परिश्रमकी अधिकता रहेगी.

कर्क- जो भी कार्य शुरू करेंगे, उसमें सफ्लता मिलेगी. अधूरी योजना को फिर से शुरू करेंगें. व्यर्थ के तनाव को टालें. पूज्य व्यक्ति की सलाह हितकारी रहेगी.

सिंह- बुजुर्गो के मार्गदर्शन से लाभ का योग है. पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा. व्यापार की योजना कारगर रहेगी. मानसिक प्रसन्नता बनी रहेगी.

कन्या- प्रतियोगी परीक्षा में सफ्लता के आसार हैं. विवादास्पद मामले सुलझ सकते हैं. आपकी बुद्धिमानी और सूझबूझ से बिगड़ा काम बनेगा.

तुला- दूसरों के मामलों में दखल से बचें. अटके काम को पूरा करने में दूसरों की मदद मिलेगी. शिक्षा के क्षेत्र में सफ्लता प्राप्त होगी. नियमितता का ध्यान रखें.

वृश्चिक- वैभव विलासिता के कार्यो में खर्च होगा. खरीददारी में विशेष रूचि रहेगी. वाहन चलाते समय सावधानी रखें. आकस्मिक धन लाभ का योग है.

धनु- कार्यस्थल पर आपके कामकाज की मिलीजुली प्रतिक्रिया रहेगी. जधनु जायजाद प्राप्तर्टी के कार्यो में सफ्लता मिलेगी. संबंधों में आपकी मधुरता रहेगी.

मकर- किसी पर भी भरोसा सोच समझकर करें. परिणय चर्चाओं में सफ्लता के आसार है. नौकरी के कार्यो में अधिकता रहेगी. मित्रता उपयोगी रहेगी.

कुम्भ- कार्यक्षेत्र में आ रही परेशानियां दूर होंगी. परिचितों के कारण अपना काम करने में मुश्किल आ सकती है. आय से अधिक व्यय होगा. लाभ सामान्य रहेगा.

मीन- छोटे-छोटे झगड़े बड़े विवाद का रूप ले सकते हैं. दिनचर्या अनियमित रहेगी. मित्रता उपयोगी रहेगी. खानपान पर संयम रखें. विवाद को टालें.

SUDOKU 6776

6					7			
		8	2				7	5
	4			3				6
	7	1			2		5	
8				4				3
	2		8			9	6	
2				8			3	
4	3				9	8		
			3					9

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 6775

7	4	6	9	1	5	8	3	2
1	5	2	8	3	7	4	6	9
9	3	8	2	6	4	7	1	5
8	6	4	7	9	1	5	2	3
5	2	7	3	4	6	9	8	1
3	9	1	5	8	2	6	7	4
2	7	9	1	5	8	3	4	6
6	1	5	4	7	3	2	9	8
4	8	3	6	2	9	1	5	7